THE WORLD BANK

SCERT पटना द्वारा विकसित एक मासिक पत्र

e-संवाद

November 2018 Vol. 01 No. 07

विषय सूची

1। अपनी बात
2। अब तक की गई चर्चा
3। लिखने–पढ़ने में सहजता लाने का एक तरीका
4। आपने साझा किया
5। एक जानकारी
5। अंग्रेजी सिखाएँ
6। अपने विचार दें

शैक्षिक विचार

हर किसी को अपने उम्र के साथ सीखने के लिए खेलना चाहिए।

डा0 राजेन्द्र प्रसाद

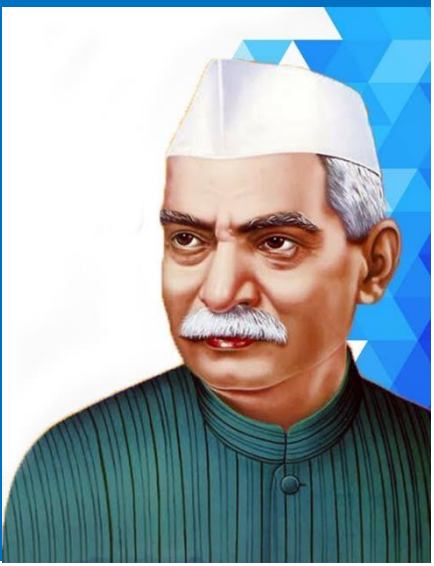

अपनी बात

प्रिय शिक्षक साथियों,

प्रत्येक माह की तरह इस माह भी e – संवाद आपके समक्ष है। आपकी प्रतिक्रिया और विचार इसकी उपस्थिति का भान कराती है। छह महीने बीत जाने के बाद भी अभी इसकी पहुँच सभी शिक्षक बंधुओं तक नहीं हो पाई है। आप से अपेक्षा है कि आप इसके प्रसार में अपना योगदान अवश्य दें। आपके पास कई शिक्षकों के Whatsapp group होंगे। आप इसमें साझा भी करते होंगे। अगर आप इस group में हमें भी जोड़ दे तो उन्हें सीधे प्राप्त कराया जा सकता है। आप इस माह कितने शिक्षकों से इसे साझा किया, हमें भी बताएं तो हमें पता चल पाएगा कि e –संवाद ने कितनी दूरी तय की है।

किसी ने साझा किया था, आपसे साझा कर रहा हूँ।

एक व्यक्ति अंगूर खरीदने बाजार गया।

पूछा **"भाव क्या है?"** दूकानदार बोला **"80 रू0 किलो।"**

पास ही कुछ अलग अलग टूटे हुए अंगूरों के दाने पड़े थे।

उसने पूछा **"क्या भाव है इनका?"** दूकानदार बोला **"30 रू0 किलो।"**

उसने पूछा **"इतने कम दाम क्यों?"**

दूकानदार बोला **"है तो ये भी बढिया, मगर अपने गुच्छे से टूटे हुए हैं।"**

मतलब साफ था अपनो से अलग होकर आपकी कीमत कम हो जाती है। अतः हम एक दूसरे से जुड़े रहे।

चूंकि यह सांतवा अंक है अतः पिछले सभी अंको का समेकन विन्दु इसमें दिए जा रहे हैं ताकि जिन्हें यह पहली बार प्राप्त हो उन्हें भी इसकी पिछली यात्रा का भान हो सके। साथ ही बच्चो में लेखन क्षमता का कैसे विकास करे पर एक आलेख शामिल किया है। म0 वि0 पोखरपुर नालंदा के गतिविधियों के फोटोग्राफ भी है। साथ ही 93 विडियो के बारे में जानकारी दी गई हैं। प्रत्येक अंक की तरह इस बार भी Rhyme दिए गए है।

आशा है आपको पसंद आएगी।

सधन्यवाद।

अब तक की गई चर्चा

म –संवाद का यह सातवां अंक है। आप में से कईयों ने इसे प्रथम अंक से प्राप्त किया है, कईयों को बाद में प्राप्त होना शुरू हुआ। आपकी सुविधा के लिए इस बार पिछले छह अंको के विन्दु दिये जा रहे हैं। आपके पास जो भी अंक न हो और आप चाहते हों तो हमें लिखें।

अंक	माह	संवाद के विन्दु
1	मई	e –संवाद के उपयोग करने के तरीके,नए सत्र की शुरूआत, सतत वृतिका विकास (Continuous Proffessional Development- CPD) क्या नया किया,सीखने सिखाने के हमारे तरीके
2	जून	संकुल की बैठकों में, पर्यावरण दिवस, Proffessional Learning Community क्या कैसे , आपने साझा किया, अंग्रेजी के Rhyme
3	जुलाई	अकादमिक चर्चा एवं प्रधानाध्यापक,शिक्षक की अकादमिक समस्याएँ मेरी शाला में – गिजू भाई, आपने साझा किया, अंग्रेजी के Rhyme
4	अगस्त	शिक्षक दिवस, सीखना कैसे, दीक्षा पोर्टल, अंग्रेजी के Rhyme
5	सितंबर	संकुल एक चिंतन करने वाली संस्था, कुशल प्रशिक्षक कैसे, ट्रेनिंग आन डिमांड पर आपके विचार, आपने साझा किया, अंग्रेजी के Rhyme
6	अक्टूबर	भाषा के बारे में, शिक्षा के उद्देश्य में श्री कृष्ण कुमार जी के दो विडियो, आपने साझा किया, अंग्रेजी के Rhyme

लिखने–पढ़ने में सहजता लाने का एक तरीका

(कक्षा 3 से 5 के बच्चों के लिये)

आमतौर पर देखने में आता है कि सरकारी स्कूलों में कक्षा 3 से 5 के अधिकांश बच्चों को पढ़ने में समस्याएं आती हैं। बहुत सारे बच्चे तो बिल्कुल ही नहीं पढ़ पाते। यहां पढ़ने का अर्थ समझकर पढ़ने से लिया जा रहा है अर्थात् पढ़ना और समझना दो अलग–अलग चीजें नहीं है बल्कि समझना पढ़ने में अन्तर्निहित है।

इस समस्या का एक कारण यह नजर आता है कि स्कूलों में बच्चों के साथ पढ़ना सीखने को लेकर पर्याप्त काम नहीं हो पाता और ना ही उन्हें पढ़ने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। स्कूलों में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिये जो तरीका काम में लिया जाता है उसमें अर्थ समझने के स्थान पर लिपि को ध्वनि संकेतों में परिवर्तित करने (Decoding) तथा वर्णों को रटने पर ज्यादा बल होता है।

पर कक्षा 3 से 5 में शिक्षण के कारगर होने के लिये ये लाजिमी शर्त है कि बच्चों की पढ़ने लिखने में सहजता हो। यदि यह बात सही है तो अब सवाल यह उठता है कि क्या ऐसे बच्चों की पठन क्षमता के विकास के लिये कोई एक या उससे अधिक ऐसे तरीके हो सकते हैं जो भाषा शिक्षण की सुविचारित प्रक्रिया को काम में लेते हों और जिसमें प्रत्येक स्तर पर अर्थ समझना महत्वपूर्ण हो। बच्चों को जिसमें अधिकाधिक पढ़ने और लिखी हुई सामग्री से स्वयं जूझने के अवसर हों।

चूंकि बच्चा भाषा संदर्भ में ही सीखता है। यहाँ संदर्भ से तात्पर्य ऐसे विवरण से है जो समझने की दृष्टि से अपने आप में अर्थपूर्ण हो। संदर्भ से वाक्य, वाक्य से शब्द और शब्द से वर्ण की ओर जाने वाली प्रक्रिया न सिर्फ सीखने में आत्मनिर्भर बनाने में मददगार होती है बल्कि भाषा की संरचना को समझने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अतः कुछ कहानियों के माध्यम से यह काम किया जा सकता है। ये कहानियां बच्चों की पाठ्यपुस्तक से भी हो सकती हैं और पाठ्यपुस्तक के बाहर से भी। यहां एक कहानी को लेकर काम की प्रक्रिया को समझ लेते हैं। काम प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित सामग्री की आवश्यकता होगी –

- कहानियों के चार्ट, जिसमें प्रत्येक चार्ट पर एक कहानी लिखी हुई हो।
- प्रत्येक कहानी की वाक्य पट्टियों के सैट (4–6 बच्चों के समूह के लिए एक सैट)
- प्रत्येक कहानी में आए शब्दों के कार्ड (4–6 बच्चों के समूह के लिए एक सैट)

काम की प्रक्रिया को समझने के लिए **''शेर और खरगोश''** कहानी को उदाहरण के रूप में काम में लिया गया है।

पहला दिन : पहले दिन शिक्षक कहानी चार्ट को कक्षा में ले जाकर ऐसे स्थान पर लगाता है जहां से बच्चों को पढ़ने में सुविधा हो तथा बच्चों का हाथ आसानी से पहुंच सके। इसके बाद वह पूरे वाक्य की तरफ इशारा करते हुए बच्चों को सामान्य प्रवाह से कहानी सुनाता है। जैसे– ''एक शेर था। एक लोमड़ी थी। दोनों दोस्त थे .....।'' इस तरह एक बार कहानी सुनाने के बाद वह बच्चों से कहानी पर बातचीत करता है। बातचीत में वह ऐसे अवसर पैदा करता है, जिसमें बच्चे कहानी के अर्थ को समझ पायें। जैसे ''कहानी में कौन–कौन थे ? खरगोश को देखकर शेर ने क्या किया ? लोमड़ी ने शेर को क्या करने को कहा ? आदि–आदि।'' इसके बाद एक बार पुनः शिक्षक कहानी को पढ़ता है, जिसमें प्रत्येक शब्द पर शिक्षक की अंगुली होती है – '' एक शेर था। एक लोमड़ी थी। दोनों दोस्त थे.....।'' पहले दिन किये गये काम का उद्देश्य कहानी का अर्थ समझने में बच्चों की मदद करना तथा कहानी में आये वाक्यों व शब्दों को पढ़ने के लिये उन्हें प्रेरित करना है। पहले दिन यह आवश्यक नहीं है कि बच्चे वाक्यों व शब्दों को पढ़ पायें।

इस दिन के काम के अंत में शिक्षक चार्ट को दीवार पर ही टंगा रहने देता है। दिन भर बच्चे अपनी मर्जी से इसमें से चीजें पढ़ते रह सकते हैं।

शेर और खरगोश

एक शेर था। एक लोमड़ी थी। दोनों दोस्त थे। कई दिनों से दोनों को खाना नहीं मिला। लोमड़ी ने एक खरगोष को आते देखा। दोनों उसे खाना चाहते थे। लोमड़ी ने शेर से कहा – "आप मरने का नाटक करो।" शेर सो गया। लोमड़ी रोने लगी। लोमड़ी ने रोते हुए कहा – "खरगोष भाई! शेर मर गया। तुम इनको कपड़े से ढकवा दो।" खरगोष उनकी चालाकी समझ गया। खरगोष ने कहा – "मरा हुआ शेर तो पूँछ हिलाता है।" यह सुन कर शेर पूँछ हिलाने लगा। यह देखकर खरगोष वहां से भाग गया।

दूसरा दिन : दूसरे दिन शिक्षक बच्चों की संख्यानुसार कहानी के सभी वाक्यों की पट्टी बनाकर ले जाता है। पहले शिक्षक शब्दों पर अंगुली रखकर कहानी को पढ़ता है। पढ़ने के बाद पुनः बच्चों से कहानी पर चर्चा करता है, जिससे बच्चे कहानी को ठीक से समझ पायें और पहले दिन किये काम से जुड़ पायें। इसके बाद वह कक्षा को उप समूहों में विभाजित कर बच्चों को वाक्य पट्टी का सैट देकर उन्हें पट्टी पर लिखे हुए वाक्यों को पढ़ने के लिए कहता है। इसके बाद शिक्षक विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कोशिश करता है कि बच्चे दीवार पर टंगे चार्ट व वाक्य पट्टियों से अधिकांश वाक्यों को पढ़ने में सक्षम हो जायें। यहां पढ़ने से तात्पर्य पूरे वाक्य को एक आकृति के रूप में पहचान कर बताने से हैं। ये गतिविधियां इस प्रकार की हो सकती हैं– 'दोनों उसे खाना चाहते थे'– पूछना कि यह वाक्य कहां लिखा है? चार्ट में लिखी कहानी में कितने वाक्य हैं? 'षेर सो गया' – से पहले कौन सा वाक्य है? अपनी (बच्चों की) वाक्य पट्टी को चार्ट से मिलाकर पढ़ने के लिये कहना, एक–दूसरे

की मदद से वाक्य पट्टी पढ़ना, वाक्य पट्टियों को क्रम से जमाना आदि।

तीसरा दिन : तीसरे दिन शिक्षक कहानी में आए सभी शब्दों के कार्ड बनाकर ले जाता है। कक्षा में जाकर वह चार्ट से कहानी को पढ़ता है। इसके बाद बच्चों को उपसमूह में विभाजित कर शब्दों के कार्ड दे देता है। वह बच्चों से शब्दों को पढ़ने तथा दीवार पर लगे चार्ट में से उन्हें ढूंढने के लिए कहता है। इसके अलावा शब्दों को वाक्य के रूप में जमाने, जोर से पढ़कर सुनाने, शब्दों से मिलाकर पूरी कहानी बनाने, शब्दों से नए वाक्य बनाने, पढ़े गए शब्दों पर अपनी किताब में घेरा लगाने आदि कार्य करने के लिए कहता है। इन सबका उद्देश्य यह है कि बच्चे कहानी में आए अधिकतर शब्दों को पढ़ पायें। यहां भी पढ़ने से तात्पर्य शब्दाकृति को पहचानकर बताने से है। इसके लिये भी शिक्षक अलग–अलग गतिविधियां सोच सकता है।

चौथा दिन : चौथे दिन शिक्षक कहानी में से चयनित दो शब्दों को काम में लेकर बच्चों के साथ इन शब्दों में आए वर्णों व मात्राओं पर काम करता है। जैसे इस कहानी से खरगोश और खाना शब्द काम में लिया गया है। शिक्षक बच्चों से बात करता है कि **खरगोश** में पहले किसकी आवाज आती है? उसके बाद किसकी आवाज आती है ? **खाना** में पहले किसकी आवाज आती है? इसी प्रकार **'ख'** और **'खा'** की आवाज में आने वाले अन्तर के आधार पर **'आ'** की मात्रा पर बच्चों के साथ काम करता है। वह सीखी गई मात्रा (ा) को अन्य वर्णों पर (सीखे गए वर्णों पर) लगाकर उच्चारण करवाता है (जैसे रा, गा, शा, ना आदि)। इसके अतिरिक्त सीखे गए वर्णों व मात्राओं से नए शब्द बनाने का काम भी किया जाता है।

यही काम छह या उससे अधिक कहानियों के साथ किया जा सकता है। कम से कम छह कहानियों पर चलने वाली इस प्रक्रिया के बाद अपेक्षा यह है कि बच्चों के पास पर्याप्त शब्द भण्डार होगा और हिन्दी पढ़ने में काम में आने वाले वर्ण व मात्राओं की उसे जानकारी होगी। इसके कारण वह नई कहानियां तथा अन्य लिखित सामग्री को सहजता से पढ़ सकेगा। यदि पढ़ने की यह प्रक्रिया लगातार चलती रहे तो वह पढ़ने में पारंगतता के स्तर तक पहुंच सकता है।

कहानियों का चुनाव करते समय निम्न बातें ध्यान रखनी चाहिये :

1. कहानियों का चुनाव करते समय अधिकतम वर्ण और मात्राएं उनमें आ जाने चाहिये।
2. कहानियों का क्रम और उसमें चयनित शब्द पहले से तय कर लिये जाने चाहिये।
3. कहानी बहुत ही रोचक हो।
4. किसी भी कहानी में 15–20 से अधिक वाक्य न हों।
5. एक वाक्य में 8–9 से ज्यादा शब्द न हों।
6. कहानी में काम में आने वाले शब्द और भाषा सरल हो।

स्रोत– 'सहज पठन– एक अध्ययन' के आधार पर सुधीर द्वारा तैयारी।

आपने साझा किया

इस अंश में म0 वि0 पोखरपुर द्वारा की गई कुछ गतिविधियों के फोटो संकलन आपसे साझा कर रहर हूँ। आप भी अपने विद्यालय की गतिविधियों को साझा करें।

फोटो संकलन : म० वि० पोखरपुर, नालंदा

एक जानकारी

SCERT के **You Tube Channel** पर विज्ञान के **93** विडियों अपलोड किए गए है। ये सभी विडियों वर्ग **6** से वर्ग **8** तक के बच्चों में विज्ञान की अवधारणएं समझने में मदद करेगी। ये विडियों स्थानीय संसाधनों से कक्षा में किए जा रहे या जाने वाले प्रयोगों को दर्शाते है। यह छत्तीसगढ़ के शिक्षको द्वारा विकसित किया गया है। इसे आप निम्न तरीके से देख सकते है। साथ ही आपसे अपेक्षा है कि आप भी इस तरह के विडियो विकसित कर साझा कर सकते है।

4 Simple steps

to access Science Videos developed by Rajiv Gandhi Shiksha Mission in the SCERT BIHAR YouTube Channel

1. **Type SCERT BIHAR in the YouTube Search Panel and click the link**

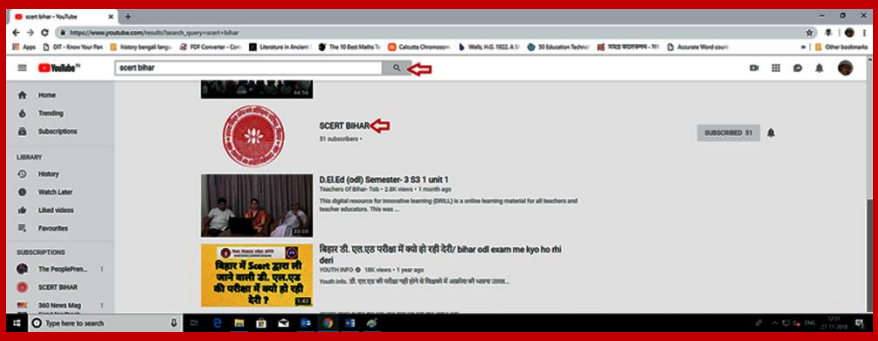

2. **You can also directly open the SCERT YouTube Channel by clicking the following link**

   https://www.youtube.com/channel/UCZ4duFxu4v2QPY_XFSt6ztQ

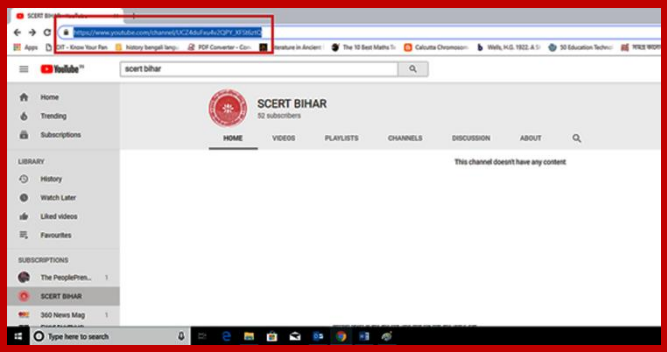

3. **After opening the SCERT Bihar YouTube Channel click on the playlist tab**

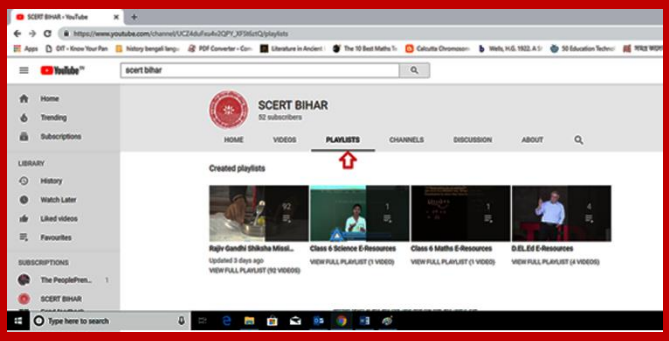

4. **Once the Playlists open, click on Rajiv Gandhi Shiksha Mission to access all videos**

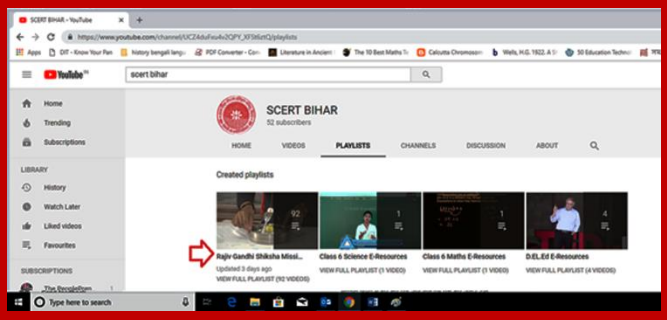

अंग्रेजी सिखाएं

ANTONYMS

Tea is ***HOT***, ice is ***COLD***

Father looks ***YOUNG***, grandpa is ***OLD.***

Use an umbrella when weather is rainy,
God is ***ONE*** but followers are ***MANY.***

Be ***BRAVE*** always, never be ***COWARD***
Cotton is ***SOFT*** but Iron is ***HARD.***

Live together and don't fight,
Work during ***DAY*** time, sleep at ***NIGHT.***

Use your pencil and draw a row,
Ladder is ***HIGH*** while desk is ***LOW.***

Shafaque Fatma
Primary school Ahmadpur, (Govt.), Rafiganj, Aurangabad

आपके विचार

आपके अनुभव अमूल्य है। हम चाहते हैं कि आपसे सार्थक संवाद स्थापित हो। इस अंक में हम पुनः पिछले विषय ही आपके समक्ष रख रहे है। आपके विचार आलेख के रूप में अपेक्षित है।

1. शिक्षकों का सतत क्षमता विकास के मायने क्या और कैसे ?
2. कक्षा प्रबंधन और शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ

आप अपने संकुल, विद्यालय, बी0 आर0 सी0 में चर्चा भी कर सकते है। चर्चा का समेकन भी हमें प्रेषित कर सकते हैं।

आप अपने विचार अपने समूह के अलावे हमें भी भेज सकते हैं।

e-Mail - esamvaad.scert@gmail.com
WhatsApp - **9973462621**

Implementation Support
Agency for SCERT, Bihar

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
महेन्द्रू, पटना, बिहार - 800006